राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • मंगलवार • 6 अप्रैल • 2021

सीएसए करेगा बेल पर शोध

कुलपति ने शोध के लिए निदेशक शोध की अध्यक्षता में बनाई कमेटी

बेल फलों के पेड़ों से ही झड़ने व टहनियों-पत्तों के सूखने की समस्या को देखते हुए लिया गया निर्णय

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर।

सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि दिव्य फल माने जाने वाले बेल पर शोध करेगा। बेल पर शोध का निर्णय बेल के पेड़ों से फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या को देखते हुए लिया गया है। जो फल लगे हुए हैं वे पेड़ पर ही सूख रहे हैं तथा पौधे भी सूख रहे हैं। इससे दिव्य फल का उत्पादन कम होने से यह लोगों से दूर होता जा रहा है।

उक्त समस्याओं के निराकरण के लक्ष्य को लेकर ही सीएसए ने बेल पर शोध करना तय किया गया है। कृषि वैज्ञानिकों ने पाया कि विवि परिसर व बागवानों के बागानों में जो बेल के पेड़ के फल लगे हैं, वे इधर विगत कई वर्षों से सही फल नहीं दे रहे हैं। विवि कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने यह समस्या

संज्ञान में आने पर शोध के लिए निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश की अध्यक्षता में एक समिति गठित की है, जिसमें डॉ. वीके त्रिपाठी, डॉ. एसके विश्वास, डॉ. वाईपी मलिक, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. रविन्द्र कुमार आदि को शामिल किया गया है। निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि बेल एक गुणकारी पौधा है। अब विवि बेल पर शोध करेगा। उन्होंने कहा कि बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है। भारतीय ग्रंथों में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है। उन्होंने कहा कि बेल के अनगिनत फायदे हैं और यह औषधीय गुणों के कारण रतौंधी, सिरदर्द, हृदय रोग, टीवी, बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया, एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में बेल के पेड़ों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मीट्रिक टन है। जबकि उप्र में बेल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर व उत्पादन 10.5 लाख मीट्रिक टन है। इसके वृक्ष क्षारीय एवं बंजर भूमियों में जिन का पीएच मान 10 तक होता है आसानी से उगाये जाते हैं। बेल के पेड़ 15 से 30 फीट तक की ऊंचाई के व काफी मजबूत होते हैं। सहायक निदेशक शोध डॉ.मनोज मिश्र ने बताया कि बेल के सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन, 0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिग्रा कैरोटीन, 0.13 मिग्रा थायमीन, 1.19 मिग्रा रिबोफ्लेविन और 8 मिग्रा विटामिन सी पाया जाता है। इसका सेवन स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभप्रद है।

बेल के पेड़ों में मिली खतरनाक बीमारी

जास, कानपुर : कानपुर व कानपुर देहात समेत अन्य जिलों में बेल के पेड़ों पर खतरनाक बीमारी का हमला हुआ है। फल कच्ची अवस्था में ही गिर रहे हैं। पेड़ ठूंठ हो रहे। सीएसए परिसर में लगे 150 से अधिक पेड़ों पर असर पड़ा है। विशेषज्ञों ने शोध करने का निर्णय किया है। शासन को भी रिपोर्ट भेजेंगे। कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश में अलग-अलग विभागों के विशेषज्ञों की टीम जल्द शोध कार्य शुरू करेगी।

सीएसए के वैज्ञानिक बेल पर शोध करेंगे

कानपुर। सीएसए के वैज्ञानिक बेल पर शोध करेंगे। शोध निदेशक डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि विवि परिसर व किसानों के यहां लगे बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है। कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देशन में डॉ. एचजी प्रकाश की अगुवाई में कमेटी गठित की गई है। जिसमें डॉ. वीके त्रिपाठी, डॉ. एसके विश्वास, डॉ. वाईपी मलिक, डॉ. संजीव कुमार आदि होंगे।

अमर उजाला
मंगलवार • 06.04.2021 05
kanpur.amarujala.com

सूख रहे बेल के पौधे, सीएसए करेगा शोध

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बेल के पौधे और फल पर शोध करेंगे। निदेशक शोध डॉ. एचजी प्रकाश ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर और बागों में बेल के पौधों में कली झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है, जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने निदेशक शोध की अध्यक्षता में समिति का गठन किया है, जिसमें डॉ. वीके त्रिपाठी, डॉ. एसके विश्वास, डॉ. वाईपी मलिक, डॉ. संजीव कुमार, डॉ. रविंद्र कुमार हैं। (संवाद)

हिन्दी दैनिक

R.N.I.No-UPHIN/2012/42725

हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

632 • कानपुर मंगलवार 6 अप्रैल, 2021 - पृष्ठ: 8 - मूल्य: 1.00 रु.

सीएसए करेगा बेल पर शोध : निदेशक शोध डॉ एचजी प्रकाश

कानपुर-चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के निदेशक शोध डॉ एच जी प्रकाश ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर एवं बागवान भाइयों के यहां रोपित बेल के पेड़ों में फल झड़ने, पत्तियां व टहनियां सूखने की समस्या आ रही है तथा जो फल लगे हुए हैं वे पेड़ पर ही सूख रहे हैं तथा पौधे भी सूख रहे हैं जिससे उत्पादन प्रभावित हो रहा है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के कुशल मार्गदर्शन एवं निदेशक शोध की अध्यक्षता में गठित समिति जिसमें डॉ वीके त्रिपाठी, डॉ एसके विश्वास, डॉक्टर वाइ पी मलिक, डॉ संजीव कुमार,डॉ रविंद्र कुमार आदि वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने गहन विचारउपरांत उक्त बेल के पौधों की समस्याओं के निराकरण हेतु शोध का निर्णय लिया है। डॉक्टर प्रकाश ने बताया कि बेल एक गुणकारी पौधा है अब विश्वविद्यालय बेल पर शोध करेगा डॉक्टर प्रकाश ने कहा की बेल बहुत ही पुराना वृक्ष है भारतीय ग्रंथों में इसे दिव्य वृक्ष कहा गया है उन्होंने कहा की बेल के अनगिनत फायदे हैं और औषधि गुण हों जैसे रतौंधी, सिरदर्द,हृदय रोग,टीवी,बदहजमी, दस्त रोकने, पीलिया और एनीमिया जैसे रोगों में काफी लाभदायक है। डॉ प्रकाश ने बताया कि भारत में बेल के फलों का क्षेत्रफल 65.06 लाख हेक्टेयर तथा उत्पादन 973.6 मेट्रिक टन है। जबकि उत्तर प्रदेश में बेल फल का क्षेत्रफल 4.77 लाख हेक्टेयर और उत्पादन 10.5 लाख मैट्रिक टन है उन्होंने बताया कि इसके वृक्ष छारीय एवं बंजर भूमियों में जिन का पीएच मान 10 तक होता है आसानी से उगाए जाते हैं तथा इसका पौधे 15 से 30 फीट तक की ऊंचाई व काफी मजबूत होते हैं सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने बताया की बेल की सौ ग्राम खाने योग्य गूदे में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन,0.39 ग्राम वसा, 31.8 ग्राम कार्बोहाइड्रेट 1.7 ग्राम खनिज लवण, 55 मिलीग्राम कैरोटीन, 0.13 मिलीग्राम थायमीन, 1.19 मिलीग्राम रिबोफ्लेविन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी पाया जाता है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी लाभप्रद है

राष्ट्रीय विकलांग पार्टी ने वि

पुलिस अधीक्षक कार्यालय